

प्राच्यप्रज्ञा

मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(A Peer Reviewed Research Journal)



2024-25



प्रधानसम्पादक

प्रो० मोहम्मद शरीफ़

डी.लिट्.

अध्यक्ष, संस्कृत विभाग

सम्पादक

प्रो० हिमांशु शेखर आचार्य

डा० सारिका वार्ष्नेय

संस्कृत विभाग

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़, उत्तर प्रदेश (भारत)

Details

DOI

DOI 10.5281/zenodo.19937918



Resource type

Dataset

Publisher

Zenodo

Published in

प्राच्य प्रज्ञा, ISSN: 2278-1242, 2026.

Rights

License



Creative Commons Attribution 4.0
International

Citation

., D. N. (2026). थेरगाथा एवं थेरी गाथाकालीन आर्थिक जीवन
[Dataset]. In प्राच्य प्रज्ञा. Zenodo.

<https://doi.org/10.5281/zenodo.19937918>

विषयानुक्रमणिका

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1.	परमसत्य ऊँ का माहात्म्य प्रो. मोहम्मद शरीफ़	01-04
2.	वेदेषु पर्यावरणविषयकचिन्तनस्यावधारणा प्रासङ्गिकता च प्रो० राम सुमेर यादव	05-10
3.	राष्ट्र ग्रन्थ रामायण का स्वरूप प्रो० शाहीन जाफ़री	11-16
4.	अवदानशतक कालीन आर्थिक जीवन डॉ० ओमकार	17-24
5.	थेरगाथा एवं थेरीगाथाकालीन आर्थिक जीवन डॉ० नीलम	25-30
6.	धम्मपद का प्रतिपाद्य विषय डॉ. ज़फ़र इफ्तेख़ार	31-36
7.	रामायण काल में प्रेम का औचित्य डॉ० ब्रजेश कुमार सोनकर	37-50

थेरगाथा एवं थेरीगाथाकालीन आर्थिक जीवन

डॉ० नीलम

भारत के प्राचीन साहित्य में पालि साहित्य अनेक अर्थों में विशिष्ट प्रकृति को प्रदर्शित करता है तथा इसकी अपनी स्वतंत्र पहचान सुस्पष्ट रूप से की जा सकती है। कपिलवस्तु के शाक्य कुल में जन्म ग्रहण करने वाले राजकुमार सिद्धार्थ ने गृह त्याग कर तथा समस्त सांसारिक सुखों के प्रति विमुख होकर उरुबेला में जो अनुपम बोधिज्ञान प्राप्त किया वही समस्त पालि साहित्य का मूल आधार एवं एक मात्र प्रेरणास्रोत है। भगवान बुद्ध ने 35 वर्ष की आयु में जिस गंभीर एवं सूक्ष्म धर्म का स्वयं साक्षात्कार किया था उसी धर्म का प्रकाशन उन्होंने अपने जीवन के पैतालीस वर्षों तक तत्कालीन मज्झिम देश के नगरों, निगमों एवं गांवों में चारिका चरण करते हुए किया। भगवान बुद्ध एक उपाय कुशल शिक्षक थे। उन्होंने विभिन्न मानसिक धरातलों के श्रोताओं को इस गंभीर धर्म का मौखिक उपदेश विविध शैलियों में दिया। गंभीर धर्म को सरल और हृदय ग्राही बनाते हुए उन्होंने विविध उपमाओं और दिन प्रतिदिन के जीवन से लिए गये रोचक दृष्टान्तों का प्रयोग किया। यह सत्य है कि भगवान का एक मात्र मन्तव्य यही था कि साधारण लोग भी उनके द्वारा अनुभूत धर्म की आधारभूत बातों को ठीक से समझ सकें तथा उनके द्वारा बतलाये मार्ग पर चल कर मन की शांति पा सकें। साहित्यिक सौन्दर्य का सृजन अथवा अपने कथनों को कवित्वमय रूप देना भगवान बुद्ध का मन्तव्य हो ही नहीं सकता था। जिस प्रकार महासमुद्र का एक मात्र रसलवण रस है उसी प्रकार भगवान बुद्ध के समस्त वचनों का एक मात्र रस निर्वाण रस है। पालिपिटक साहित्य के किसी भी संग्रह का विविध दृष्टियों से परीक्षण करते समय भगवान बुद्ध के इस मौलिक उद्देश्य को सदा ध्यान में रखना आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध पत्र में थेर एवं थेरी गाथा में चित्रित तत्कालीन आर्थिक दशा पर दृष्टिपात किया गया। ज्ञातव्य हो कि किसी भी समाज का उत्कर्ष मनुष्य के आर्थिक जीवन की उन्नति और सुख सुविधाओं पर निर्भर करता है। समय-समय पर मनुष्य के आर्थिक कार्यक्रम उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप घटते बढ़ते और कभी-कभी परिवर्तित भी होते रहते हैं, किन्तु आर्थिक जीवन का मूल आधार कृषि, पशु पालन और व्यापार सदा किसी न किसी रूप में अवश्य मौजूद रहा है। इन्हें भारतीय शास्त्रकारों ने वार्ता के अन्तर्गत विवेचित किया है। आज भी विश्व का समाज इन्हीं संसाधनों पर टिका है, भले ही इनका आधुनिकीकरण होने से इनके पुराने स्वरूप में अत्याधिक बदलाव हो गया है। प्राचीन भारतीय समाज के आर्थिक जीवन का विकास क्रमशः हुआ है वैदिक युगीन प्रारम्भिक आर्यों की आर्थिक दशा कोई बहुत अधिक सुसंगठित और सुव्यवस्थित नहीं थी। उससे पूर्व सैन्धु व सभ्यता काल में भारत की अर्थव्यवस्था सुसम्पन्न थी। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई से यह ज्ञात होता है कि तत्कालीन सुव्यवस्थित नागरीय व्यवस्था आर्थिक सम्पन्नता का द्योतक है पर आर्यों के आक्रमण के साथ इसका विनाश हुआ। इसके बाद की आर्थिक स्थिति अनुन्नत और विघटित रही। पूर्व वैदिक युग के लोग प्रधान रूप से पशु पालन और कृषि पर ही निर्भर थे। वैदिक समाज के आर्य विष और कृषक दो वर्गों में विभाजित हो गये। पहला वर्ग अभिजात वर्ग के अन्तर्गत ब्राह्मण और राजन्य आ गये तथा साधारण वर्ग में कृषि कला, कुषीद और व्यापार का काम करने वाले लोग शामिल हो गये। उत्तर वैदिक युग तक आर्य अधिक साधन सम्पन्न हो गये, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सशक्त और क्रियाशील हुई। वे पशुपालन के साथ-साथ कृषि कार्य करने लगे जिससे उत्तरोत्तर विकास होता गया।

बुद्ध काल में भारतीय जनता का आर्थिक जीवन सुखी और समृद्ध था। इस समय आर्थिक जीवन का मूल आधार कृषि, पशु पालन, व्यापार तथा शिल्प थे, जिसका पालिसाहित्य में विस्तार में वर्णन किया गया है। उस समय के मनुष्यों विशेषतः सेठों की प्रभूत सम्पत्ति का वर्णन मिलता है। चम्पा निवासी सोण कोटिविंश (बीस करोड़) का धनी था।¹ साकेत के सेठ धन्वं जनने, अंगुतर निकाय अट्टकथा के अनुसार अपनी पुत्री विशाखा के लिए नौ करोड़ मूल्य से महलता नाम आभूषण बनवाया था। श्रावस्ती के प्रसिद्ध व्यापारी अनाथ पिण्डक ने जेतवन की सारी भूमि को सोने की मुहरों से किनारे से किनारा मिला कर ढक कर जेत कुमार से उसे खरीदा था, इसमें उसकी अट्टारह करोड़ मुहरे लगी थी।² दीर्घनिकाय की अट्ट कथा सुमंगल विलासिनी के अनुसार वही सेठ बौद्ध काल में वास्तविक रूप से धनवान माना जाता था, जिसके पास चालीस करोड़

थेरगाथा एवं थेरीगाथाकालीन आर्थिक जीवन

धन हो और जो प्रतिदिन पांच अम्मण (अनाज मापने का एक माप) से लेकर एक तुम्ब (अनाज मापने का एक माप) तक कर्षापणों की खरीद विक्री करता हो।³ अनेक बुद्ध कालीन, ब्राह्मण-महाशालों की भी प्रभूत सम्पत्ति के वर्णन मिलते हैं, जिन्हें अक्सर अड्ड, महद्धना तथा महाभोगा कह कर पुकारा गया है। कृषकों की अवस्था समृद्ध थी।

शिल्पकारों का बुद्ध कालीन सामाजिक जीवन में महत्त्वपूर्ण तथा आदरणीय स्थान था। वहीं दूसरी ओर बुद्धकालीन सामाजिक जीवन में मजदूर कठिनता से जीवन व्यतीत करते थे। बुद्धकाल में दो प्रकार के श्रमिक थे जिन्हें कम्मकार और दास कह कर पुकारा जाता था। ये पुरुष भी होते थे और स्त्रियां भी।

थेर एवं थेरीगाथा में थेरों एवं थेरियों के आंतरिक अनुभवों का वर्णन है। इससे तत्कालीन आर्थिक दशा का विशेष विवेचन नहीं किया जा सकता है पर अट्ट कथाओं के आधार यह कहा जा सकता है कि अधिकतर भिक्षु और भिक्षुणियां धनाढ्य घर के थे। प्रभूत सम्पत्ति के अधिकारी थे। थेरसुगन्ध का जन्म एक धनीमाता-पिता के घर हुआ था। वह उस धन से पीड़ित सा दिखलाई पड़ता था। सम्पन्नता उसे आंखों में कोंटे की तरह अखरती थी।⁴ रमणीय विहारीथेर का जन्म एक धनी परिवार में हुआ था। धनी परिवार में पैदा होने से भोग विलास में जीना तो उसकी प्रकृति थी। युवावस्था में उसकी प्रकृति और भी बढ़ गई। बुद्ध ने जीने के कई विकल्प दिये थे। रमणीय विहारी के जीवन में एक दिन घटित ऐसी घटनाओं ने उसके जीवन में विराग पैदा कर दिया। वे बुद्ध के पास जाकर प्रव्रजित हो गये।⁵ उसी प्रकार रामण्य्यक थेर का जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। उन्हें सम्पन्नता में रहकर सुख और ऐश्वर्य में जीवन यापन करते हुए भी कभी सच्चे सुख का अनुभव नहीं हुआ। उन्होंने इस बात को अच्छी तरह जान लिया था कि सम्पन्नता से परिपूर्ण जीवन में शुद्धि नहीं है, बल्कि विकार पैदा होते हैं। एक दिन घर परिवार का त्याग कर बुद्ध धर्म में प्रव्रजित हो गया।⁶ थेरगाथा की एक कथा से पता चलता है कि भद्दिजिथेरभदिय नगर के एक सेठ का पुत्र था। वह अपनी सम्पत्ति का वर्णन अपने उदान वाक्यों में करता है—

पनादों नाम सोराजा, यस्स यूपोसुवण्णयो।
तिरियंसोळसुब्बोधा, अब्भमाहुसहस्सधा।।
सहस्सकण्डो सतगे ण्डुधजालुहरितामयो,
अनच्चुंतत्थगन्धब्बा, छसहस्सानि सत्तधाति।।⁷

अर्थात् महापनाद नाम का वह राजा था, जिसका महल सोने का था। उसका महल मीलों तक लम्बा था और आसमान को छूता था। उसकी हजारों मंजिलें थीं, सैकड़ों दरवाजे थे। जगह-जगह पर ध्वजा और नीम के पेड़ खड़े थे, वहां हजारों गन्धर्व सात मण्डलियों में नाचते थे।

प्राचीनकाल से ही कृषि, कृषि उपकरण एवं योग्य भूमि आदि का ज्ञान जन साधारण को था। बौद्ध युग में आर्थिक सम्पन्नता कृषि पर आधारित थी। चीवर के ऊपर अंकित की गई आकृति भी कृषि का प्रतीक ही है। बुद्ध ने रत्नागिरि पर खड़े होकर खेतों का दृश्य देखा था। यह दृश्य बुद्ध को बड़ा सुहावना लगा था और इसी की प्रेरणास्वरूप उन्हें भिक्षुओं के चीवर बनाने की कल्पना मिली थी "देखते हो आनन्द! मगध के इन मेढ़ बंधे, कतारबंधे, मर्यादाबंधे, चौमेड़, बंधे खेतों को क्या आनन्द भिक्षुओं के लिए ऐसे चीवर बना सकते हो।" सचमुच विभिन्न प्रकार के कपड़ों को सीकर बनाये गये भिक्षुओं का चीवर मगध के खेत के समान ही लगते थे, जिनमें छोटे छोटे आकार के अनेक खेत जुड़े हुए होते थे। खेतों में प्रयुक्त कृषि उपकरण आज के समान ही थे। उस समय खेत हल से जोते जाते थे। फसल पक जाने पर हसिया से काटते थे तथा उन्हें मंडित कर चलनी और सूप से ओसाकर अनाज एवं भूसा को अलग करते थे, खेतों को जोतने के लिए हल अनिवार्य उपकरण था। उस समय भी हलों में बैल जोड़कर खेत जोते जाते थे जैसे कि आज। थेरीगाथा में हल से खेत जोतने का उदाहरण आया है, जो इस प्रकार है— पटाचारा अपने उदान वाक्यों में कहती है—

नंगलेहिकसं खेतं, बीजानिपवपं छमा।

पुत्तदारानिपोसेन्ता, धनंविन्दन्तिमाणवा।।^८

अर्थात् किसान हल से भूमिको जोत कर उसमें बीज बोते हैं, इस प्रकार वे धन उपार्जन करते हैं और अपनी स्त्री पुत्रादि का पालन पोषण करते हैं। इसी प्रकार पटाचारा की तीस शिष्याएं जो सामान्य घरों से आयी थीं—उन्होंने उसने धान से चावल निकालने और उसे अलग करने की प्रक्रिया को उपमा के द्वारा समझाते हुए अपना अनुभव निम्न शब्दों में सुनाया—

मुसलानिगहेत्वान, धञ्जं कोट्टन्तिमाणवा।

पुत्तदारानिपोसेन्ता, धनंविन्दन्तिमाणवा।।^९

अर्थात् लोग मूसलों से धानकूट-कूट कर अर्थ प्राप्त करते हैं और अपने स्त्री पुत्रादि का पालन पोषण करते हैं।

बौद्ध काल में जिस ढंग से खेती की जाती थी, वह उस युग के अनुरूप होते हुए भी प्रायः आजकल के समान था। महानाम शाक्य अपने छोटे भाई

थेरगाथा एवं थेरीगाथाकालीन आर्थिक जीवन

अनुरुद्ध को गृहस्थी की जानकारी देते हुए कहता है— पहले खेत को जोतना चाहिए जुतवाकर बोना चाहिए बोकर पानी देना चाहिए। पानी भरकर निकालना चाहिए निकालकर फसल को सुखाना चाहिए सुखवाकर कटवाना चाहिए कटवाकर ऊपर लाना चाहिए ऊपरलाकर सीधा करवाना चाहिए सीधा करवाकर भूसी हटानी चाहिए भूसी हटवाकर फटकवाना चाहिए फटकवाकर जमा करना चाहिए।¹⁰

इस तरह बुद्धकालीन आर्थिक दशा के सम्बन्ध में त्रिपिटकों में भरपूर साक्ष्य प्राप्त होते हैं। थेर एवं थेरीगाथा पूरी तौर पर भिक्षु एवं भिक्षुणियों की आध्यात्मिक अनुभूतियों का चित्र प्रस्तुत करता है इसलिए आर्थिकदशा का विशेष चित्र इन गाथाओं में उपलब्ध नहीं है। अधिकतर थेर एवं थेरी गाथाओं के अधिसंख्यक थेर एवं थेरियां सम्पन्न वर्ग से आये थे। वस्तुतः बौद्ध धर्म का प्रबल प्रभाव उस समय के सामान्य निर्धन वर्ग की अपेक्षा सामन्तो एवं धनी व्यापारियों के वर्गों पर अधिक था यही कारण है कि बौद्ध कला एवं स्थापत्य के पुराने नमूने प्रायः श्रावस्ती, साकेत, वाराणसी, पाटलिपुत्र, वैशाली तथा चम्पा जैसे नागरिक स्थलों में अधिक मात्रा में प्राप्त हुए हैं। पालि त्रिपिटक के दूसरे स्थलों का सूक्ष्म परीक्षण करके आधुनिक विद्वानों ने बुद्धकालीन भारतीय समाज की आर्थिक अवस्था का जो सामान्य चित्र प्रस्तुत किया है उससे यह तथ्य उभरकर सामने आया है कि उस समय के समाज में शासक वर्ग, व्यापारी वर्ग तथा बड़े किसानों के वर्गों की आर्थिक स्थिति जहां अत्यधिक अच्छी थी वहां समाज के अधिसंख्यक निम्न वर्ग की आर्थिक अवस्था निश्चित रूप से सन्तोषप्रद नहीं थी।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है बुद्ध कालीन भारतीय समाज में आर्थिक विषमता की स्थिति थी, जिसमें कुछ इने गिने लोग ही उत्पादन के साधनों पर पूर्ण आधिपत्य जमाये हुए थे। दूसरी ओर छोटे किसानों, हस्तशिल्पियों तथा विविध प्रकार के श्रमिकों की बहुत बड़ी संख्या अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संघर्षरत थी। अर्थिक विषमता का यह चित्र थेरों एवं थेरियों के अधिकतर जीवन वृत्तान्तों में सुस्पष्ट दृष्टव्य होता है।

सन्दर्भसूची

1. विनय पिटक, हिन्दी अनुवाद, पृ. 199;
2. वही, पृ.-461; जातक- 1.119;
3. सुमंगल विलासिनी भाग- 2, पृ.ट- 586;
4. सुगन्ध थेर गाथा कथा संख्या- 24;

प्राच्य-प्रज्ञा

5. रमणीय विहारित्थेर, गाथा संख्या 45;
6. रामणे'येकथेर गाथा, गाथा संख्या 46;
7. थेरगाथा, गाथा संख्या- 163-164;
8. थेरीगाथा, गाथा संख्या- 112;
9. वही- 117-175;
10. विनय पिटक 1- 4 हिन्दी अनुवाद- 2 पृ. 477;

विभागाध्यक्ष
संस्कृत-विभाग
बी०डी०एम०म्यू०

गर्ल्स डिग्री कॉलेज शिकोहाबाद फिरोजाबाद